# श्रीगणेश भुजङ्गम्

रणत्क्षुद्र घण्टा निनादाभि रामं
चलत्ताण्ड वोद्दण्डव त्पद्मतालम् ।
लसत्तुन्दि लाङ्गोपरि व्यालहारं
गणाधीश मीशान सूनुं तमीडे ॥ १॥

ध्वनि ध्वंस वीणाल योल्लासि वक्त्रं
स्फुरच्छुण्ड दण्डोल्लस द्बीज पूरम् ।
गलद्दर्प सौगन्ध्य लोलालि मालं
गणाधीश मीशान सूनुं तमीडे ॥ २॥

प्रकाशज्जपा रक्त रत्न प्रसून-
प्रवाल प्रभा तारुण ज्योति रेकम् ।
प्रलम्बोदरं वक्रतुण्डैक दन्तं
गणाधीश मीशान सूनुं तमीडे ॥ ३॥

विचित्र स्फुरद्रत्न माला किरीटं
किरीटो ल्लसच्चन्द्ररेखा विभूषम् ।
विभूषैक भूशं भव ध्वंस हेतुं

गणाधीश मीशान सूनुं तमीडे ॥ ४॥

उदञ्च द्भुजा वल्लरी दृश्यमूलो-
च्चलद्भ्रू लता विभ्रम भ्राज दक्षम् ।
मरुत्सुन्दरी चामरैः सेव्यमानं
गणाधीश मीशान सूनुं तमीडे ॥ ५॥

स्फुर न्निष्ठुरा लोल पिङ्गाक्षि तारं
कृपा कोमलोदार लीलावतारम् ।
कला बिन्दुगं गीयते योगिवर्यै-
र्गणाधीश मीशान सूनुं तमीडे ॥ ६॥

यमेकाक्षरं निर्मलं निर्विकल्पं
गुणातीत मानन्द माकार शून्यम् ।
परं पार मोङ्कार माम्नाय गर्भं
वदन्ति प्रगल्-भं पुराणं तमीडे ॥ ७॥

चिदानन्द सान्द्राय शान्ताय तुभ्यं
नमो विश्वकर्त्रे च हर्त्रे च तुभ्यम् ।
नमोऽनन्त लीलाय कैवल्यभासे

नमो विश्वबीज प्रसीदेश सूनो ॥ ८॥

इमं सुस्तवं प्रातरुत्थाय भक्त्या
पठेद्यस्तु मर्त्यो लभेत्सर्वकामान् ।
गणेश प्रसादेन सिध्यन्ति वाचो
गणेशे विभौ दुर्लभं किं प्रसन्ने ॥ ९॥

इति श्रीमच्छङ्कराचार्य कृतं गणेश भुजङ्ग प्रयात स्तोत्रं
सम्पूर्णम् ॥